

स्पंदनी स्त्री. (तत्.) 1. रजस्वला नारी 2. हमेशा दूध देते रहने वाली गाय 3. काम-धेनु।

स्पंदित वि. (तत्.) 1. जिसमें स्पंदन हो रहा हो, मंद-मंद हिलता या काँपता हुआ 2. धड़कता हुआ 3. फड़कता हुआ।

स्पंदी वि. (तत्.) जिसमें स्पंदन हो, जो मंद-मंद हिल/धड़क/फड़क रहा हो, स्पंदशील।

स्पर्धन पुं. (तत्.) स्पर्धा करने की क्रिया/भाव।

स्पर्धनीय वि. (तत्.) 1. स्पर्धा करने योग्य (व्यक्ति/विषय) 2. जिसके विषय में स्पर्धा की जा सके।

स्पदर्धा स्त्री. (तत्.) 1. होड़ 2. प्रतियोगिता 3. मुकाबला, प्रतिद्वंद्विता 4. ईर्ष्या न करते हुए किसी के समान होने की इच्छा।

स्पदर्धी वि. (तत्.) 1. स्पर्धा करने वाला, प्रतियोगी, प्रतिद्वंद्वी 2. अभिमानी।

स्पर्श पुं. (तत्.) 1. त्वचा का गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है 2. किसी वस्तु या व्यक्ति को छूने की क्रिया/भाव जैसे- वह माँस को स्पर्श तक नहीं करता 3. एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना/छूना, सटाव 4. तनिक सा मिश्रण, पुट व्या. 'क्' से 'म्' तक की 25 ध्वनियों में से प्रत्येक ज्यो. सूर्य या चंद्र ग्रहण का आरंभ।

स्पर्श-कोण वि. (तत्.) किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा में बनने वाला कोण।

स्पर्शा-क्रामक वि. (तत्.) स्पर्श होने पर आक्रमण करने वाला, छुतहा, संक्रामक।

स्पर्श-ग्राह्य वि. (तत्.) स्पर्श द्वारा जाना/समझा जा सकने वाला। tactile

स्पर्श-जन्य वि. (तत्.) 1. स्पर्श के परिणामस्वरूप होने वाला, स्पर्श से उत्पन्न 2. संक्रामक।

स्पर्शज्या स्त्री. (तत्.) गणि. किसी समकोण त्रिभुज में लंब और आधार का अनुपात।

स्पर्शता स्त्री. (तत्.) स्पर्श का भाव।

स्पर्शत्व वि. (तत्.) दे. स्पर्शता।

स्पर्श दिशा स्त्री. (तत्.) व्या. वह दिशा जिधर से सूर्य या चंद्रमा को ग्रहण लगा हो/लगने को हो, सूर्य या चंद्रमा पर ग्रहण की छाया आने की दिशा।

स्पर्शन पुं. (तत्.) 1. स्पर्श करने या छूने की क्रिया/भाव 2. देने की क्रिया, दान 3. लगाव, संबंध 4. हवा, वायु।

स्पर्शना स्त्री. (तत्.) छूने का भाव।

स्पर्शनीय वि. (तत्.) जिसे छूआ जा सके, स्पर्श करने योग्य, स्पृश्य।

स्पर्शनेंद्रिय स्त्री. (तत्.) स्पर्श करने वाली इंद्रिय, त्वचा।

स्पर्शमणि पुं. (तत्.) पारस पत्थर।

स्पर्श रेखा स्त्री. (तत्.) गणि., ज्या. वह रेखा जो किसी वक्र या पृष्ठ को स्पर्श करती है, स्पर्शी।

स्पर्श-वैकल्य पुं. (तत्.) मनो. स्पर्श व्या. संवेदन के क्षीण होने की अवस्था।

स्पर्श-संघर्षी वि. (तत्.) व्या. ऐसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण का आरंभ श्वास-नली के साथ जीभ के स्पर्श से हो किंतु ध्वनि निकलने का कार्य झटके के साथ या एकदम न होकर धीरे-धीरे होता है जैसे- हिंदी में 'च्', 'छ्', 'ज्' और 'झ्' स्पर्श-संघर्षी ध्वनियाँ हैं।

स्पर्श-संचारी पुं. (तत्.) शुक्र रोग का एक भेद।

स्पर्श संवेदनमिति स्त्री. (तत्.) मनो. मनोभौतिकी की एक शाखा जिसमें स्पर्श-संवेदनों एवं दाब-संवेदनों तथा उनकी सीमाओं को मानने संबंधी कार्य होता है।

स्पर्श-हानि स्त्री. (तत्.) शुक्र रोग में रक्त के दूषित होने के कारण लिंग की त्वचा में स्पर्श-ज्ञान न रह जाना।

स्पर्शा स्त्री. (तत्.) दुश्चरित्रा स्त्री, छिनाल, पुंश्चली।

स्पर्शाज वि. (तत्.) जिसे स्पर्श की अनुभूति न होती हो।